नवल टाइम्स

RNI No. UTTHIN/2012/42590

भारत सरकार से विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

वर्ष : 14 अंकः 25 हिन्दी साप्ताहिक हरिद्वार, बृहस्पतिवार 10 जुलाई 2025 मूल्यः 1 रूपया पृष्ठः 4

कैबिनेट बैठक में उत्तराखंड की पहली जियोथर्मल पॉलिसी को मिली मंजूरी

अब पुत्र के बालिग होने पर भी मिलेगी विधवा-वृद्धावस्था पेंशन

देहरादून(नवल टाइम्स)। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की अध्यक्षता में हुई मंत्रिमंडल की बैठक संपन्न हो गई है। कैबिनेट बैठक में तमाम महत्वपूर्ण प्रस्तावों पर मुहर लगाई गई है, जिसके तहत पीडब्ल्यूडी (लोक निर्माण विभाग) के तहत प्रदेश के बी ग्रेड के पुलों को ए ग्रेड में अपग्रेड किए जाने को लेकर करोड़ों रुपए की परियोजना को मंजूरी दी गई है। इसके साथ ही प्रदेश की पहली जियोथर्मल पॉलिसी को मंजूरी मिल गई है।

यही नहीं, सतर्कता विभाग को और मजबूत किए जाने को लेकर ढांचे में संशोधन किया गया है। सतर्कता विभाग ने 20 नए पद बढ़ाए जाएंगे। इस तरह सतर्कता विभाग में पदों की संख्या 132 से बढ़कर 152 हो जाएगी। लोक निर्माण विभाग के तहत पुलों की वहन क्षमता बढ़ाने से संबंधित अध्ययन के लिए परियोजना प्रबंधन इकाई (पी.एम.यू) के गठन की सहमति। विजिलेंस विभाग में 20 नये पदों के लिए स्वीकृति। अब पदों की संख्या 132 से बढ़कर 152 होगी। इलेक्ट्रॉनिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय भारत सरकार द्वारा सूचीबद्ध 7 कम्पनियों को सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित सेवाओं और

सामग्रियों की आपूर्ति के लिए राज्य में भी सूचीबद्ध करने का निर्णय लिया गया। उत्तराखंड राज्य खनिज अन्वेषण न्यास, नियमावली 2025 को मंजूरी। खनिज अन्वेषण में राज्य सरकारों विशेष रूप से लघु खनिजों के मामले में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। राज्य सरकारों को राज्य खनिज अन्वेषण न्यास स्थापित करने के लिये प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय खनिज अन्वेषण न्यास के शासी निकाय की छठी बैठक में चालू और आगामी वित्तीय वर्षों में राज्य खनिज अन्वेषण न्यास में राज्य सरकारों द्वारा वार्षिक संग्रह के 10 प्रतिशत की सीमा तक राज्य सरकारों को अनुदान प्रदान करने का निर्णय लिया गया है। इस सम्बन्ध में खान मंत्रालय भारत सरकार के द्वारा दिये गये निर्देशों के अनुपालन में उत्तराखंड राज्य खनिज अन्वेषण न्यास के गठन के लिए नियमावली प्रख्यापित की गई है। उत्तराखंड जिला खनिज फाउन्डेशन न्यास नियमावली, 2025 प्रख्यापित किये जाने की स्वीकृति। कैबिनेट द्वारा उत्तराखंड जिला खनिज फाउन्डेशन न्यास नियमावली, 2017 यथासंशोधित 2023 के कतिपय प्राविधानों को संशोधित करने एवं कतिपय अतिरिक्त नवीन प्राविधानों को सम्मिलित करते हुए उत्तराखंड जिला खनिज फाउन्डेशन न्यास नियमावली, 2025 प्रख्यापित की जाने का अनुमोदन प्रदान किया गया। उत्तराखंड जियो थर्मल एनर्जी पॉलिसी 2025 को दी मंजूरी। उत्तराखंड जियो थर्मल एनर्जी पॉलिसी 2025 का उद्देश्य राज्य में जियो थर्मल संसाधनों की खोज एवं पहचान हेतु वैज्ञानिक और तकनीकी अनुसंधान को प्रोत्साहित करना है, जो आर्थिक और पर्यावरणीय दृष्टि से व्यवहार्य हो। नीति का उद्देश्य चिन्हित भू-तापीय ऊर्जा स्थलों के विकास और उपयोग को प्रोत्साहित करने के साथ ही भू-तापीय ऊर्जा के उत्पादन और विद्युत उत्पादन, हीटिंग और कूलिंग सिस्टम के प्रत्यक्ष इस्तेमाल, जल शुद्धिकरण और सामुदायिक विकास में इस्तेमाल को प्रोत्साहित करना है। इस नीति के माध्यम से भू-तापीय ऊर्जा के माध्यम से राज्य में कार्बन उत्सर्जन को कम करने और राज्य के दीर्घकालिक पर्यावरणीय व ऊर्जा लक्ष्यों में योगदान के माध्यम से राज्य की ऊर्जा सुरक्षा को सुदृढ़ करना है। यह नीति राज्य के सभी भू-तापीय परियोजनाओं पर लागू होगी। इसका कार्यान्वयन राज्य के ऊर्जा विभाग द्वारा उरेडा, और यू.जे.वी.एन.एल के सहयोग से किया जाएगा। राज्य कर विभाग में डिजिटल फॉरेंसिक प्रयोगशाला की स्थापना का निर्णय। राज्य कर विभागान्तर्गत डिजिटल फोरेंसिक लैबोरेटरी की स्थापना की परिकल्पना की गई है, जिसका उद्देश्य सूचना एवं साक्ष्यों का कलेक्शन , रिट्रीवल एवं एनालिसिस करते हुए कराधान के कानूनों का प्रभावी अनुपालन किया जाना है। फोरेंसिक लैबोरेटरी से राज्य कर विभाग के साथ ही राज्य में स्थित अन्य विभाग यथा सीजीएसटी, इनकम टैक्स आदि को भी लाभ मिलेगा। उत्तराखंड वित्त सेवा संवर्ग के ढ़ांचे का पुनर्गठन किये जाने के अनुमोदन। उत्तराखंड वित्त सेवा संवर्ग के ढांचे में सृजित विभिन्न वेतनमान एवं प्रास्थिति के पदों को विभागीय कार्यावश्यकता के दृष्टिगत कार्य एवं दायित्वों के आधार पर श्रेणीवार पदों की कुल संख्या को अपरिवर्तित रखते हुए पुनर्वितरण किये जाने का अनुमोदन हुआ। बच्चों के बालिग (18 वर्ष) होने पर भी विधवा और वृद्धावस्था पेंशन नियमित रूप से दिए जाने का निर्णय लिया गया।

नि:स्वार्थ भाव से मानवता की सेवा कर रहा रेडक्रॉस : राज्यपाल

राज्यपाल ने रेडक्रॉस की आपदा राहत सामग्री वाहनों को दिखाई हरी झंडी

हरिद्वार/देहरादून(नवल टाइम्स)। राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (सेनि) ने राजभवन परिसर से राज्य के सभी जनपदों हेतु भारतीय रेडक्रॉस समिति, नई दिल्ली द्वारा उपलब्ध कराई गई आपदा राहत सामग्री वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। आपदा राहत सामग्री के 05 वाहनों में कम्बल, तिरपाल, किचेन सेट और अन्य जरूरी सामान है, जो जरूरतमंदों को जरूरत के समय सम्बंधित जिलों की रेडक्रॉस सोसाइटी द्वारा उपलब्ध कराई जाएगी। इस अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि यह मानवीय सहायता का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो आपदा के समय राहत पहुंचाने में अत्यंत सहायक सिद्ध होगा।

उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड जैसे भौगोलिक दृष्टि से संवेदनशील राज्य में रेडक्रॉस समिति की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है। रेडक्रॉस एक ऐसी संस्था है जो नि:स्वार्थ भाव से जरूरतमंदों की सहायता करती है। यह संस्था मानवता-आधारित सेवा के लिए जानी जाती है और इसके वॉलेंटियर्स निरंतर नि:स्वार्थ भाव से सेवा में जुटे रहते हैं। महामहिम राज्यपाल ने रेडक्रॉस के सभी पदाधिकारियों से अनुरोध किया कि वे इस राहत सामग्री को प्रदेश के सभी जनपदों की जिला रेडक्रॉस

समितियों के माध्यम से उचित पात्रों तक सुनिश्चित रूप से पहुंचाएं, ताकि इसका समुचित उपयोग हो और यह वास्तव में जरूरतमंदों तक पहुंचे। महामहिम राज्यपाल ने सभी रेडक्रॉस वॉलेंटियरों के प्रति आभार प्रकट किया। उन्होंने लोगों से अधिक से अधिक संख्या में रेडक्रॉस से जुड़ने का आह्वान किया। इस अवसर पर चेयरमैन मैनेजिंग कमेटी, भारतीय रेडक्रॉस समिति उत्तराखण्ड डॉ. नरेश चैधरी, वाईस चेयरमैन मैनेजिंग कमेटी, भारतीय रेडक्रॉस समिति उत्तराखण्ड डॉ. आनन्द भारद्वाज, सदस्य मैनेजिंग कमेटी, जनपद देहरादून डॉ. मनोज वर्मा, सीएमओ मनोज शर्मा, सदस्य मैनेजिंग कमेटी मो. ओबेदुल्ला अंसारी, चिकित्साधिकारी राजभवन डॉ. महावीर त्यागी एवं डॉ. एके सिंह सहित रेडक्रॉस समिति के वॉलेंटियर उपस्थित रहे।

तकनीक में दक्षता और संस्कृति में गहराई, बच्चों के सर्वांगीण विकास का मूलमंत्र

ऋषिकेश(नवल टाइम्स)। परमार्थ निकेतन में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा के पावन अवसर पर स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी ने संदेश दिया कि सनातन संस्कृति में गहराई और तकनीक में दक्षता ही बच्चों का उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित कर सकती है। श्री नट्टू भाई जी के श्री मुख से हो हो रही श्रीमद् भागवत कथा ज्ञानयज्ञ के शुभ अवसर पर आज कथा में श्रद्धा, भक्ति और ज्ञान की दिव्य गंगा प्रवाहित हुई। कथा श्रवण करने हेतु गुजरात सहित देश के अन्य राज्यों से आये श्रद्धालुओं ने मां गंगा के पावन तट पर स्थित परमार्थ निकेतन में आयोजित गंगा आरती, यज्ञ और आध्यात्मिक सत्संग का लाभ ले रहे हैं स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी ने कहा कि आज का युग तकनीक से संचालित है। मोबाइल, इंटरनेट, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सोशल मीडिया बच्चों की दुनिया का हिस्सा बन चुके हैं। डिजिटल युग में बच्चों के पास सूचनाओं की कोई कमी नहीं है, एक क्लिक में विश्वभर का ज्ञान उपलब्ध है परंतु प्रश्न यह है कि इस जानकारी की दिशा क्या है? क्या यह ज्ञान उन्हें केवल बाहरी सफलता दे रहा है, या उनके भीतर मूल्यों और संस्कारों की गहराई भी दे रहा है?

स्वामी जी ने कहा कि आज की शिक्षा प्रणाली दिन-प्रतिदिन डिजिटल होती जा रही है लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि हम तकनीक से बच्चों का बौद्धिक विकास करें और साथ ही सनातन संस्कृति, भारतीय जीवनमूल्यों, अध्यात्म और नैतिक शिक्षाओं से उनके मन, मस्तिष्क और आत्मा का पोषण भी करें। यही समय की मांग है। उन्होंने कहा कि आज के बच्चे अत्यंत बुद्धिमान, तेज और जिज्ञासु हैं लेकिन केवल तेज गति से दौड़ने से ही कोई जीवन की दौड़ नहीं जीतता। बच्चों को दिशा देना, विवेक देना और सही-गलत में भेद करने की समझ देना जरूरी है। इसके लिए रामायण, महाभारत, गीता, वेद-उपनिषद तथा पूज्य संतों व महापुरुषों की जीवनी अत्यंत उपयोगी हो सकती हैं। यही ग्रंथ उन्हें सच्चे अर्थों में चरित्रवान बनाते हैं स्वामी जी ने कहा कि यदि बचपन से ही बच्चों में सेवा, समर्पण, करुणा, सहिष्णुता, सत्य और अहिंसा जैसे मूल्य रोपे जाएं, तो वे न केवल अच्छे विद्यार्थी बल्कि संवेदनशील नागरिक और सशक्त मानव बनेंगे। संस्कारविहीन शिक्षा केवल मशीनें बनाती है, जबकि संस्कृति आधारित शिक्षा मानवता से परिपूर्ण नायकों का निर्माण करती है। स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी ने कहा कि बच्चों को केवल सूचना नहीं, दृष्टि दीजिए। टेक्नोलॉजी उनके हाथ में है, लेकिन संस्कृति उनके हृदय में होनी चाहिए। यदि बच्चों को सनातन संस्कृति के बीज दिए जाएं, तो वे स्वयं आगे चलकर संस्कारित समाज का वृक्ष बनेंगे। यही उज्ज्वल भारत का आधार है। बच्चों को आधुनिकता की उड़ान और संस्कृति की जड़ दोनों दें। यही संतुलन उन्हें न केवल व्यक्तिगत रूप से सफल बनाएगा, बल्कि भारत को भी एक समरस, संस्कारित और सशक्त राष्ट्र बनाएगा।

सोशल मीडिया की गलत पोस्ट से शांति व्यवस्था हुई प्रभावित तो होगी कार्यवाही

हरिद्वार। एसएसपी प्रमेन्द्र सिंह डोबाल ने कांवड़ मेले के प्रारम्भ होने से पूर्व शरारती तत्वों को एक कड़ा सदेंश देने का प्रयास किया है। एसएसपी ने सदेंश में कहा हैं कि 11 जुलाई से एक धार्मिक कांवड़ यात्र प्रारम्भ होने जा रही है, जोकि 23 जुलाई तक चलेगी, लेकिन श्रावण मास होने के चलते कांवड़ यात्रा आगे भी चलती रहेगी। धार्मिक कांवड़ यात्रा में करोडों की संख्या में कांवड़िये हरिद्वार आते हैं, जो हरिद्वार से गंगा जल लेकर अपने निर्धारित शिवालयों पर जलाभिषेक करते हैं। कानून व्यवस्था को बनाने में हरिद्वार पुलिस का फोकस रहता है, लेकिन कुछ दिनों से देखा जा रहा है कि कुछ शरारती तत्वों द्वारा सोशल मीडिया में अपने फ्लोवरस को बढ़ाने के लिए किसी घटना की प्रमाणित के जाने बिना ही ऐसी पोस्ट किये जा रहे हैं जिससे समाजिक सद्भाव के लिए खतरा पैदा हो रहा है। मैं ऐसे तत्वों को स्पष्ट रूप से बताना चाहता हूँ कि आप की किसी भी गलत पोस्ट से अगर हरिद्वार की या फिर आसपास की शांति व्यवस्था पर आच आती है तो ऐसी पोस्ट को करने वालो और उसको शेयर करने वालों के खिलाफ पुलिस जो भी सख्त वैधानिक कार्यवाही अमल में लायी जाएगी। पोस्ट करने वालों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया जाएगा और शेयर करने वालों को भी उसमें शामिल किया जाएगा।

सम्पादकीय

छद्म नाम की क्या जरूरत?

क्या किसी भी देश का कानून नाम और पहचान छिपाकर व्यापार करने, नौकरी करने या धार्मिक आयोजन में मुख्य वक्ता बनने की अनुमति प्रदान करता है ? यदि नहीं, तो राजनीतिक दलों के मुखिया नाम और पहचान छिपाकर व्यापार करने को सही कैसे ठहरा सकते है? यह प्रश्न धार्मिक आयोजनों, मेलों, उत्सवों में पहचान छिपाने के कृत्यों से उपजा है। यूँ तो भारत जैसे पंथ निरपेक्ष राष्ट्र में हर कोई संविधान का अनुपालन करने को प्राथमिकता देता है तथा बार बार यही दोहराता है कि देश सिर्फ और सिर्फ संविधान से चलेगा। इसमें कुछ गलत भी नही है। आम आदमी जिसे राष्ट्र से सरोकार है, वह कभी भी न्याय के विरुद्ध किसी विमर्श को मान्यता नहीं देता, किंतु वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में अधिकांश राजनीतिक दल अपने अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए धर्म और जाति की राजनीति करने पर आमादा हैं तथा आपराधिक घटनाओं में अपने राजनीतिक स्वार्थ खोज कर समाज का जातीय आधार पर बंटवारा करने के कुत्सित प्रयास में जुटे हैं। धार्मिक कथाओं के आयोजन में जाति छिपा कर कथा व्यास बनने में पीछे नही हैं तथा होटल, ढाबे व खानपान की दुकानों के छद्म नाम रखकर सामान्य जन की धार्मिक आस्था से खिलवाड़ कर रहे हैं । ऐसी स्थिति को किसी भी प्रकार से न्याय सम्मत कैसे ठहराया जा सकता है। देश में साझा संस्कृति आदिकाल से चली आ रही है, किंतु राजनीति के दुकानदारों को राष्ट्रीय एकता व अखंडता की जगह जातीय और धार्मिक वोट बैंक की परवाह है। कोई मुस्लिम तुष्टिकरण के लिए मुस्लिम वोटों पर एकाधिकार स्थापित करना चाहता है, तो कोई जाति नायक बन कर समाज को अगड़ा, पिछड़ा, दलित सवर्ण में बाँट कर समाज में विघटन के बीज बो रहा है। कहीं ब्राह्मण समाज को खलनायक सिद्ध करने का प्रयास किया जा रहा है, कहीं राजपूत समाज को, कभी जाति आधारित दलों के नायक दोगलेपन की सीमाएं लांघते हुए एकपक्षीय समाज विरोधी आचरण करने में जुटे हैं। उत्तर प्रदेश में प्रतिवर्ष श्रावण मास में कांवड़ यात्रा का आयोजन होता है। जिसमें करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था जुड़ी है तथा श्रद्धालु जन खान पान की शुद्धता का ध्यान रखते हैं। ऐसे में यदि कोई विधर्मी अपनी धार्मिक पहचान छिपाकर छद्म नाम से भोजनालय संचालित करता है, तो उसे धोखाधड़ी का आरोपी क्यों नहीं बनाया जाना चाहिए?

अपनी पहचान जाहिर करने में कैसी शर्म!

- डॉ. आशीष वशिष्ठ

भगवान शंकर के प्रिय माह सावन की शुरूआत 11 जुलाई से है। सावन की शुरुआत के साथ ही कांवड़ यात्रा का शुभारंभ हो जाएगा। कांवड़ यात्रा में शिवभक्त नंगे पांव हाथ में कांवड़ लेकर लंबी दूरी तय करके शिवलिंग या ज्योतिर्लिंग में जाते हैं और पवित्र नदियों के जल से उनका अभिषेक करते हैं।

उत्तर प्रदेश में बड़े पैमाने पर कांवड़ यात्रा निकालने की परंपरा है। कांवड़ यात्रा का विराट रूप पश्चिमी उत्तर प्रदेश में दिखता है। हरिद्वार से कांवड़ लेकर निकलने वाले कांवड़ यात्री इस मार्ग से निकलते हैं। इस मार्ग में भगवान शिव के कई बड़े प्राचीन एवं प्रसिद्ध मंदिर हैं। यहां पर श्रद्वालु भगवान का जलाभिषेक करते हैं। मुजफ्फरनगर, शामली, मेरठ से लेकर गाजियाबाद, हापुड़ तक के शिव मंदिरों में इस मार्ग से गंगाजल लेकर भक्त कांवड़ यात्रा निकालते हैं। लेकिन कांवड़ यात्रा शुरू होने से पहले ही पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कांवड़ यात्रा मार्ग पर तनाव बढ़ गया है।

असल में, मुजफ्फरनगर जिले के बघरा गांव में योग साधना आश्रम के संचालक और सनातन धर्म के प्रचारक स्वामी यशवीर महाराज पिछले कुछ वर्षों से कांवड़ मार्ग पर दुकानों और ढाबों पर नेम प्लेट लगाने की मांग करते रहे हैं। उनका कहना है कि कांवड़ मार्ग पर कुछ लोग हिंदू देवी-देवताओं के नाम पर ढाबे और दुकानें चलाकर शिव भक्तों को धोखा दे रहे हैं। पहचान छुपाकर धोखा देने वाले कई मामले सामने आने के बाद पिछले साल उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड सरकारों ने आदेश जारी किए कि कांवड़-यात्रा के मार्ग के ढाबे, होटल, रेस्तरां, दुकानदार, खोमचेवाले स्पष्ट नाम पट्टिका लगाएंगे। सरकार का मंतव्य है कि कांवडियों की आस्था और श्रद्धा खंडित न हो। सुप्रीम कोर्ट ने इस आदेश इस पर रोक लगा दी थी। हालांकि, इस साल भी उप्र और उत्तराखंड की सरकारों ने पिछले साल की भांति आदेश जारी किए हैं। ताजा प्रकरण यह है कि, स्वामी यशवीर महाराज और हिंदूवादी संगठन के कार्यकर्ता कांवड़ मार्ग स्थित दिल्ली-दून हाईवे स्थित पंडित वैष्णो ढाबा पर पहुंचे। वास्तव में, ढाबा मुस्लिम का था, लेकिन बोर्ड पर लिखा था-'पंडित का शुद्ध वैष्णो ढाबा।' यानी पहचान छिपाने का अपराध किया गया था। पंडित वैष्णो ढाबे को सनव्वर नाम का एक मुस्लिम व्यक्ति चलाता है। इस ढाबे में उसका बेटा आदिल और जुबैर समेत दो अन्य लोग भी काम करते हैं।

कहा जा रहा है कि यशवीर महाराज और अन्य ने ढाबे के मालिक और कर्मचारियों की धार्मिक पहचान जांचने के लिए पैंट उतरवाई। विवाद यहीं से भडक़ा। आग में घी डालते हुए समाजवादी पार्टी के पूर्व सांसद एसटी हसन ने पहचान वाले मामले को पहलगाम आतंकी हमले से जोड़ने का काम किया। हसन ने कहा कि, मैं पूछना चाहता हूं कि क्या आम नागरिकों को अधिकार है कि वह किसी दुकानदार की पैंट उतरवाकर चेक कर सकते हैं? क्या पहलगाम में आतंकियों ने पैंट नहीं उतरवाई थी? ऐसा करने वाले और पहलगाम के आतंकवादियों में क्या अंतर रह गया?

उस ढाबे पर यह घटना हुई अथवा नहीं, पुलिस इसकी जांच कर रही है। लेकिन प्रकरण को 'सांप्रदायिक मोड़' दे दिया गया। पहलगाम एक सुनियोजित आतंकी कृत्य था। इन दोनों घटनाओं की तुलना करना न केवल तथ्यात्मक रूप से गलत है, बल्कि यह समाज में धार्मिक आधार पर तनाव पैदा करने का प्रयास भी है।

पिछले साल कांवड़ यात्रा के समय जब नेम प्लेट लगाने के आदेश जारी हुए थे, तो खूब हंगामा मचा था। उस समय सोशल मीडिया से लेकर अखबारों और समाचार चैनलों तक में इस बात की बड़ी चर्चा थी कि कैसे एक आदेश के चलते रातों रात मुजफ्फरनगर का संगम शुद्ध शाकाहारी होटल बन गया सलीम ढाबा। मां भवानी जूस कार्नर का नाम हो गया फहीम जूस केंद्र। टी प्वाइंट का नाम हो गया अहमद टी स्टाल। ऐसे ही नीलम स्वीट्स का मालिक निकला मोहम्मद फजल अहमद।

गुरु पूर्णिमा : मानवता को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करने वाला पर्व

भारत की सांस्कृतिक विरासत हमें मानवीय मूल्यों से परिचित कराती है तथा ज्ञान और शाश्वत शिक्षा प्रदान करती है। इसका विविध एवं सर्वव्यापी स्वरूप सामूहिक चेतना को जागृत करता है जिसकी अभिव्यक्ति भारत में मनाए जाने वाले विभिन्न त्यौहारों के रूप में होती है। ये त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं हैं बल्कि ये हमारी प्रकृति के साथ जुड़ाव तथा वैज्ञानिक सोच एवं आध्यात्मिक चिंतन से जुड़े हैं। गुरु पूर्णिमा एक ऐसा ही विशेष अवसर है जो हमें इतिहास में घटित घटनाओं के बारे में रूककर विचार करने और उन्हें समझने का अवसर प्रदान करता है। यह हमें यह जानने के लिए प्रोत्साहित करता है कि विगत की परिस्थितियों में अब क्या बदलाव आया है, किन बातों को हम अभी भी अपनाए हुए हैं और हमने अपने पीछे क्या कुछ छोड़ दिया है? हमने व्यक्ति के रूप में कितनी और सामूहिक रूप में कितनी उपलब्धियां हासिल की हैं? अपनाने और छोड़ने के इस दौर में हमारा साथ किन लोगों ने सबसे अधिक दिया? जीवन के उथल-पुथल एवं दुख से भरे समय में जबकि हमारा काफी अधिक पतन हो सकता था वैसे अस्थिर समय में किसने हमारा साथ दिया? ये सभी ऐसे प्रश्न हैं जिनके समाधान के लिए हमें गुरु या एक पथ-प्रदर्शक शक्ति की सर्वाधिक अहम भूमिका होती है चाहे वह कोई व्यक्ति हो, सिद्धांत हो या हमारे अंतर्मन की शक्ति हो जो हमारी जीवन यात्रा के दौरान सर्वाधिक शक्तिशाली मित्र के रूप में हमारा साथ निभाती है। समय की कसौटी पर खरे उतरे वे कौन से सिद्धांत हैं, जो हमें जीवन के पथ पर एक संतुलित यात्री बने रहने में सफल बनाते हैं। हमारे जीवन की इन सभी विविध परिस्थितियों के बीच प्राय: अदृश्य अथवा दृश्य, मूर्त या अमूर्त ऐसी शक्तियां होती हैं चाहे वो किसी पथ-प्रदर्शक का हाथ हो या कोई दिव्य विचार हो, मां का सानिध्य हो, शिक्षक के ज्ञान भरे शब्द हों या किसी मित्र का साथ हो जो हमारा पथ-प्रदर्शक बन जाता है। अत: गुरु पूर्णिमा ऐसे सभी शक्तियों को चाहे वह दृश्य हों अथवा अदृश्य, जो हमारा मार्गदर्शन करती हों, हमें सही रूप में ढालती हों और हमारे जीवन में उन्नति के पथ पर हमारा साथ देती हों, सभी को सम्मानित करने का एक पवित्र अवसर है। गुरु पूर्णिमा का त्योहार व्यक्ति के जीवन और उसके सामाजिक मूल्यों को एक सही रूप में ढालने में गुरु की भूमिका को सम्मानित करने की एक शाश्वत परंपरा है। आसाढ़ मास की पूर्णिमा के इस दिन का गहरा आध्यात्मिक, ऐतिहासिक तथा सामयिक महत्व है क्योंकि इसी दिन आदिगुरु भगवान शिव ने सप्तऋषियों को योग का ज्ञान प्रदान किया था। इसी दिन महर्षि वेदव्यास की जन्म जयंती भी मनाई जाती है। इसके साथ ही, पूर्णिमा के दिन से चतुर्मास आरंभ होते हैं जो मानसून के दौरान के पवित्र चार महीने हैं जबकि साधु-संत किसी एक ही स्थान पर रहकर अपने शिष्यों को ज्ञान देते हैं। आसाढ़ मास की पूर्णिमा के बारे में ऐसा कहा जाता है कि इस दिन चांद के शीतल प्रकाश की ऊर्जा हमारे आंतरिक मन को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करती है। गुरु पूर्णिमा का यह त्योहार हमें उन लोगों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है जिन्होंने हमारे मन में ज्ञान की ज्योति जगाई है।

संस्कृत शब्द गुरु दो शब्दों गु (अंधकार) और रु (हटाना) का संयोजन है जिसका अर्थ होता है एक ऐसा व्यक्ति जो हमारे मन से अंधकार अर्थात अज्ञानता को दूर करता हो। प्राचीन वैदिक परंपरा में गुरु शिष्य परंपरा शिक्षा का आधार थी। गुरुकुल में शिक्षार्थियों को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करके उन्हें विचारशील बनाया जाता था तथा नैतिकता का पाठ पढ़ाकर उनकी नैतिक दुविधाओं का समाधान किया जाता था। गुरुकुल में शिक्षा की यह प्रक्रिया शिक्षार्थियों को कर्म के माध्यम से मूल्य आधारित जीवन जीने व चरित्र निर्माण करने के लिए निरंतर प्रेरित करने की प्रक्रिया थी। गुरु के महत्व और महानता को केवल शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता। गुरु मात्र एक शिक्षक ही नहीं होते बल्कि उनकी उपस्थिति ही एक ऐसी जीवंत शक्ति, एक ऐसी अनुभूति होती है जो शक्ति, मार्गदर्शन और प्रेरणा का एक निरंतर स्रोत होती है। जिस प्रकार पूर्णिमा संपूर्णता, शुद्धता और प्रकाश का प्रतीक है ठीक उसी प्रकार गुरु में भी वैसी

ही महानता होती है और गुरु भी ज्ञान से संपूर्ण, निष्कपट और मन से अज्ञानता के अंधकार को दूर करने के स्रोत होते हैं।

प्रसिद्ध संत कबीर ने गुरु की तुलना कुम्हार से और शिष्य की तुलना मिट्टी के कच्चे बर्तन से करते हुए कहा है कि,

गुरु कुम्हार है, शिष्य कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट। अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट॥

इसका अर्थ है: गुरु कुम्हार है और शिष्य मिट्टी का घड़ा है। जिस प्रकार कुम्हार घड़े को भीतर से हाथ का सहारा देकर और बाहर से चोट मारकर गढ़ता है, उसी प्रकार गुरु भी शिष्य को भीतर से प्रेम, करुणा और ज्ञान का सहारा देकर और बाहर से डांट-फटकार लगाकर उसकी बुराइयों को दूर करता है और उसे अनुशासित व परिष्कृत करता है।

गुरु एक छिपे हुए और कभी भी खत्म न होने वाले ज्ञान का भंडार है - उनके आशीर्वाद मौन होते हुए भी जीवन में आमूल बदलाव लाने वाले होते हैं और शिष्य के मन में सच्चाई और अच्छाई से जुड़े मूल्यों से युक्त ज्ञान व बुद्धिमत्ता भरते हैं। रामायण काल में विश्वामित्र और भगवान राम के बीच तथा भक्तिकाल में गुरु रविदास और मीरा बाई, रामानंद और कबीर, गुरु नानक देव जी और उनके बाद हुए गुरुओं के बीच का संबंध- सभी भारतीय सभ्यता में आध्यात्मिक और बौद्धिक आदान-प्रदान की अमिट विरासत के उदाहरण हैं। इन पवित्र बंधनों ने समाज को एक नैतिक ढांचा प्रदान किया और इसके आंतरिक विकास को बढ़ावा दिया। आधुनिक युग में, देश के लोगों के मन में राष्ट्रवाद की अलख जगाने वाले छत्रपति शिवाजी महाराज तथा समाज को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करने में समर्थ गुरु रामदास, स्वामी विरजानंद सरस्वती और स्वामी दयानंद सरस्वती का योगदान अविस्मरणीय रहेगा। इसी गुरु परंपरा में स्वामी रामकृष्ण परमहंस भी हुए हैं जिनकी शिक्षा ने स्वामी विवेकानंद को एक आध्यात्मिक महापुरुष बनाया, जिन्होंने बाद में भारतीय दर्शन को पाश्चात्य देशों तक पहुँचाया। इसी प्रकार, महावतार बाबाजी, लाहिड़ी महाशय, श्री युक्तेश्वर और परमहंस योगानंद जैसे महापुरुषों द्वारा दिए गए ज्ञान की ज्योति दुनिया भर के साधकों का मार्गदर्शन करती रहेगी और उन्हें अपने मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी। उनके द्वारा दिए गए ज्ञान ने विश्व-बंधुत्व की भावना को बढ़ाया है और लोगों को ज्ञान की दिव्य दृष्टि प्रदान की है। विश्व के सभी देशों में देवत्व के प्रति निष्ठा, समर्पण और व्यक्तिगत संबंध को अभिव्यक्त करने की परंपरा देखी जाती है। पश्चिमी देशों में ईश्वर की प्रार्थना के दौरान 'ओ माई मास्टर' शब्द का प्रयोग किया जाता है जो ईश्वर के साथ गहरे आध्यात्मिक जुड़ाव का सूचक है।

प्रथम गुरु के रूप में मां शिशु को इस नए विश्व से परिचित कराती है और जीवन में पहला कदम उठाना सिखाती है। अगर दूसरे नजरिये से देखा जाए तो हमारी पांचों ज्ञानेन्द्रियां- कान, त्वचा, नेत्र, जिह्वा और नाक - बाहरी दुनिया से संवेदी सूचनाएं प्राप्त करती हैं, पांचों कर्मेन्द्रियां- हाथ, पांव, वाणी, गुदा, जननांग- शारीरिक क्रियाएं करती हैं तथा अंत:करण की चारों वृत्तियां - मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त हमारे विचारों, भावनाओं और क्रियाओं को प्रभावित करती हैं। यदि संक्षेप में कहा जाए तो, हमारी ज्ञानेंद्रियां प्रत्यक्ष जगत से प्राप्त जानकारियों को एकत्र करती हैं, मन उन्हें समझता है, बुद्धि निर्णय लेती है, अहंकार अनुभव को वैयक्तिक बनाता है, कर्मेंद्रियाँ क्रिया संपन्न करती हैं और चित्त उसे स्मृति के रूप में दर्ज करता है। गुरु ज्ञान के जिज्ञासुओं को ज्ञान प्रदान करता है जबकि सद्गुरु अपने शिष्यों में बुद्धिमत्ता का संचार करता है। उनके मार्गदर्शन से ही इन सभी अदृश्य आंतरिक जटिलताओं के बीच हमारे मन में सद्गुणों का संचार होता है।

सभी सद्गुणों से युक्त व्यक्ति एक पुष्ट फलों से युक्त फलते-फूलते वृक्ष के समान है जिसकी मज़बूत जड़ों को गुरु के ज्ञान, परिवार के सहयोग और समग्र समाज के मूल्यों से सींचा गया हो। व्यक्ति के कर्म इन आंतरिक मूल्यों की केवल अभिव्यक्ति हैं। पूर्णिमा का विशेष अवसर इन सभी तथ्यों पर आत्मनिरीक्षण का अवसर प्रदान करता है। यह मात्र एक खगोलीय घटना नहीं है, यह एक आध्यात्मिक दर्पण है, एक सांस्कृतिक समारोह है, एक वैज्ञानिक घटना है, तथा जीवन में नवीनता लाने, चिंतन करने तथा कृतज्ञता व्यक्त करने का एक गहन प्रतीकात्मक अवसर है। इसका महत्व धर्म, ज्ञान की विभिन्न शाखाओं और सदियों तक विस्तीर्ण है तथा हमें हमारे अंत:करण में स्थित प्रकृति की लय और चक्र की याद दिलाता है। पूर्णिमा संपूर्णता और ज्ञानोदय का प्रतीक है- एक ऐसा समय है जबकि हम अपने स्वत्व की खोज सर्वाधिक स्पष्ट रूप में कर सकते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे चंद्रमा सूर्य के प्रकाश को पूरी तरह से परावर्तित करता है। योगी और संत प्राय: पूर्णिमा को गहन ध्यान, जप, उपवास और दिव्य ऊर्जा से जुड़ने के लिए एक आदर्श समय मानते हैं।

गुरु पूर्णिमा सीखने, ज्ञान अर्जन करने और कृतज्ञता व्यक्त करने का त्योहार है। सूचना की भरमार, भ्रम, तुलना और प्रतिस्पर्धा के इस युग में एक सच्चे गुरु की हमारे जीवन में उपस्थिति काफी महत्वपूर्ण है चाहे वह आध्यात्मिक गुरु हों अथवा कोई प्रशिक्षक, शिक्षा प्रदाता, माता-पिता या डिजिटल मार्गदर्शक क्यों न हों। उनकी उपस्थिति धर्म एवं धार्मिक अनुष्ठानों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। 21वीं सदी के अनिश्चितता से भरे दौर में जबकि भू-राजनीतिक तनाव लगातार बढ़ रहे हैं, आतंकवाद, उग्रवाद, मादक पदार्थों की तस्करी, साइबर युद्ध और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ युवाओं को परेशान कर रही हैं, गुरुओं और संतों की ज्ञान परंपरा का उत्सव गुरु पूर्णिमा पूरी दुनिया के लिए अत्यधिक प्रासंगिक है। आज के युग में लोगों द्वारा नैतिकता पर बिलकुल विचार नहीं करने एवं गलत और सही कार्यों के बीच अंतर नहीं कर पाने के कारण लोगों के सामने ढेर सारी चुनौतियां उत्पन्न हो रही हैं तथा सामाजिक ताना-बाना बिखर रहा है। ऐसे में गुरु की उपस्थिति मात्र से ही लोगों को गलत रास्ते पर जाने से रोका जा सकता है।

आज हम जैसे-जैसे डिजिटल युग की ओर बढ़ रहे हैं, गुरु पूर्णिमा का शाश्वत संदेश हमें ज्ञान प्राप्त करने, अपने मन की शक्ति से मार्गदर्शन प्राप्त करने, अपने गुरु और मार्गदर्शक का सम्मान करने तथा दूसरों के लिए ज्ञान का स्रोत बनने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह समाज में मानव मूल्यों को पोषित एवं सृजित करने का एक माध्यम सिद्ध होगा।

- अर्जुन राम मेघवाल,

केंद्रीय विधि एवं न्याय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और संसदीय कार्य राज्य मंत्री, भारत सरकार

सुविचार

पाई भी न बचे, मेरे लिए सबसे बड़ा सुख यही होगा।

- पुरुषोत्तमदास टंडन

अनादर करता है, वैसे-वैसे वह उसकी कांति को बढ़ाता है।

- वासवदत्ता

बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति बोर्ड बैठक में 127 करोड़ के बजट का अनुमोदन

देहरादून(नवल टाइम्स)। श्री बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति की बोर्ड बैठक अध्यक्ष हेमंत द्विवेदी की अध्यक्षता में समिति के कैनाल रोड स्थित कार्यालय सभागार में हुई।

भगवान श्री बदरीविशाल तथा भगवान श्री केदारनाथ की आरती के साथ बैठक की शुरुआत हुई। बैठक में सर्वप्रथम नवनियुक्त सदस्यों का परिचय हुआ साथ ही पदाधिकारियों तथा सदस्यों का स्वागत किया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विजन के अनुरूप अब तक सफलतापूर्वक चल चारधाम यात्रा कुशल मार्गदर्शन हेतु प्रदेश सरकार तथा यशस्वी मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का आभार जताया गया। बैठक का संचालन करते हुए बीकेटीसी मुख्य कार्याधिकारी विजय प्रसाद थपलियाल ने नवगठित बीकेटीसी की पहली बैठक में सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों का स्वागत किया इसके बाद वित्त अधिकारी मनीष कुमार उप्रेती ने बजट मंदिर समिति बोर्ड के समक्ष रखा बैठक में चर्चा के बाद मंदिर समिति के वर्ष 2025-26 के बजट का अनुमोदन किया गया।

श्री बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति अध्यक्ष हेमंत द्विवेदी ने बताया कि श्री बदरीनाथ धाम तथा श्री केदारनाथ धाम हेतु कुल 1,270999070 (एक सौ सत्ताईस करोड़ नौ लाख निन्यानबे हजार सत्तर) रुपये का बजट प्रावधान किया गया है। श्री बदरीनाथ धाम हेड 64,2227070 (चैसठ करोड़ बाईस लाख सत्ताईस हजार सत्तर रुपये) का बजट प्रावधान किया गया है. इसे प्रस्तावित आय माना गया है। श्री केदारनाथ धाम हेड 628770000 (बासठ करोड़ सत्तासी लाख सत्तर हजार रुपये बजट प्रावध्धान किया है। यह बजट में प्रस्तावित आय है। आय के सापेक्ष श्री केदारनाथ धाम हेतु 409337000 चालीस करोड़ तिरानबे लाख सैंतीस हजार रुपये व्यय दिखाया गया है इसी तरह श्री बदरीनाथ धाम हेतु प्रस्तावित आय के सापेक्ष 568683320 (छप्पन करोड़ छियासी लाख तिरासी हजार तीन सौ बीस रुपये व्यय दिखाया गया है।बताया कि श्री बदरीनाथ तथा श्री केदारनाथ धाम में 8 जुलाई 2025 तक 2478963 (चैबीस लाख अठहत्तर हजार नौ सौ तिरसठ तीर्थ यात्रियों ने दर्शन कर लिये है। जिनमें से श्री बदरीनाथ धाम में 1137628 (बारह लाख सैतीस हजार छ सौ अठाइस श्रद्धालुओं ने दर्शन किये है तथा श्री केदारनाथ धाम में 1341335 (तेरह लाख इकतालीस हजार तीन सौ पैंतीस तीर्थ यात्रियों ने दर्शन किये हैं। श्री बदरीनाथ धाम हेतु अभी तक 1432983 पजीकरण हुए है तथा श्री केदारनाथ धाम हेतु 1549930 तीर्थ यानियों ने पंजीकरण करवाया है। चारों धामों में यात्रा सुचारु है तथा मानसून के मौसम में यात्रा सतत चल रही है। बैठक में सभी पदाधिकारियो, दोनों उपाध्यक्षों सहित सभी सदस्यगणों ने बैठक चर्चा प्रतिभाग किया। बीकेटीसी मीडिया प्रभारी डा. हरीश गौड़ ने अवगत कराया कि बैठक की समाप्ति से पहले केदारनाथ हैली दुर्घटना में दिवंगत हुए मंदिर समिति कर्मचारी विक्रम रावत सहित यात्राकाल के दौरान दुर्घटनाओं में दिवंगत हुए तीर्थयात्रियों के प्रति शोक संवेदना स्वरूप दो मिनट का मौन रखा गया। बैठक में उपाध्यक्ष ऋषि प्रसाद सती, उपाध्यक्ष विजय कपरवाण, सदस्यगण क्रमश: श्रीनिवास पोस्ती, महेंद्र शर्मा, धीरज पंचभैया मोनू, देवी प्रसाद देवली, राजपाल जड़धारी, प्रह्लाद पुष्पवान, डा. विनीत पोस्ती, राजेंद्र प्रसाद डिमरी, नीलम पुरी,दिनेश डोभाल सहित प्रभारी अधिकारी बदरीनाथ विपिन तिवारी, विधि अधिकारी एसएस बर्त्वाल, निजी सचिव प्रमोद नौटियाल, अतुल डिमरी, विश्वनाथ, संजय भट्ट आदि मौजूद रहे।

मुख्य सचिव आनंद बर्धन की अध्यक्षता में हुई व्यय समिति की बैठक

विभिन्न परियोजनाओं और विकास कार्यों से संबंधित प्रस्तावों का प्रेजेंटेशन दिया गया

देहरादून(नवल टाइम्स)। मुख्य सचिव आनंद बर्धन की अध्यक्षता में सचिवालय में व्यय समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में विभिन्न विभागों के अधिकारियों द्वारा विभिन्न परियोजनाओं और विकास कार्यों से संबंधित प्रस्तावों का प्रेजेंटेशन दिया गया। जिस पर समिति द्वारा वित्तीय अनुमोदन प्रदान किया गया। जनपद पौड़ी गढ़वाल के विकासखंड पौड़ी के अंतर्गत है गणियागांव पट्टी गगवाडस्यूं एवं ग्राम देवार पट्टी सीतोनस्यूं में एनसीसी अकादमी के निर्माण कार्य के लिए 7598.07 लाख रुपए की धनराशि का अनुमोदन किया गया। राज्य योजना के अंतर्गत जनपद टिहरी गढ़वाल के नरेंद्रनगर विधानसभा में मुनि की रेती स्थित राम झूला सेतु के स्ट्रेंथनिंग एवं सुरक्षात्मक कार्य हेतु 1097.72 लाख रुपए की धनराशि का अनुमोदन किया गया। पुलिस लाइन रेस कोर्स देहरादून में टाइप-दो (ब्लॉक ए) के 120 आवासों के निर्माण कार्य हेतु 5253.75 लाख रुपए की धनराशि का अनुमोदन किया गया। पुलिस लाइन रेस कोर्स देहरादून में टाइप-2 (ब्लॉक बी) के 120 आवासों के निर्माण कार्य हेतु 5207.47 लाख रुपए की धनराशि का अनुमोदन किया गया। पुलिस लाइन रेस कोर्स देहरादून में टाइप टू (ब्लॉक सी) के 120 आवासों के निर्माण कार्य हेतु 5214.91 लाख रुपए की धनराशि का अनुमोदन किया गया। जिला कारागार हरिद्वार में द्वितीय चरण में टाइप - थर्ड के 5 एवं टाइप सेकंड के 50 आवासों के निर्माण कार्य हेतु 2125.72 लाख रुपए की धनराशि का अनुमोदन किया गया। जिला कारागार देहरादून में द्वितीय चरण में टाइप सेकंड के 60 आवासों के निर्माण कार्य हेतु 2165.33 लाख रुपए की धनराशि का अनुमोदन किया गया। मुख्य सचिव ने इस दौरान निर्देश दिए कि अनुमोदित किए गए।

डीएम ने वेयर हाउस का निरीक्षण कर सुरक्षा व्यवस्थाओं का लिया जायजा

हरिद्वार। जिलाधिकारी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी मयूर दीक्षित ने वेयर हाउस का मासिक निरीक्षण कर सुरक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

जिलाधिकारी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी मयूर दीक्षित ने रोशनाबाद जिला कार्यालय परिसर में स्थित वेयर हाउस पहुंच कर राजनीतिक पार्टियों के पदाधिकारियों की उपस्थिति में वेयर हाउस का मासिक निरीक्षण कर सुरक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने सीसी कंट्रोल रूम का भी निरीक्षण किया तथा सुरक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान वेयर हाउस की सुरक्षा में तैनात किए गए सुरक्षा कर्मियों से कहा कि ईवीएम-वीवीपीएटी की सुरक्षा में किसी भी प्रकार की कोई लापरवाही व शिथिलता नहीं होनी चाहिए, सभी कार्मिक अपने दायित्वों का निर्वहन सतर्कता एवं संवेदनशीलता के साथ करे। निरीक्षण के दौरान अपर जिलाधिकारी दीपेंद्र सिंह नेगी, राष्ट्रीय भारतीय कांग्रेस के जिलाध्यक्ष चन्द्र पाल सिंह, सीपीआई द्धएमऋराजीव गर्ग, मंडल अध्यक्ष भाजपा बिन्दर पाल, सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी अरुणेश पैन्यूली, सुरक्षा कार्मिक आदि मौजूद रहे।

सड़क निर्माण के लिए बजट जारी होने पर ग्रामीणों ने जताया पूर्व कैबिनेट मंत्री स्वामी यतिश्वरानंद का आभार

हरिद्वार। हरिद्वार ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र के ग्राम इब्राहिमपुर को हरिद्वार रुड़की हाईवे से जोड़ने वाली सड़क के निर्माण की राज्य योजना से स्वीकृति होने पर स्थानीय निवासियों ने पूर्व कैबिनेट मंत्री स्वामी यतीश्वरानंद के माध्यम से मुख्यमत्री पुष्कर सिंह धामी का आभार जताया। स्वामी यतीश्वरानंद ने कहा कि मूलभूत सुविधाओं के लिए जनता हित में मुख्यमंत्री धामी निरंतर काम कर रहे हैं।

हरिद्वार रुड़की हाईवे से इब्राहिमपुर की ओर जाने वाली सड़क के सुदृढीकरण सुधारीकरण के लिए राज्य योजना के अंतर्गत शासन ने एक करोड़ 77 लाख 9 हजार रुपये स्वीकृत कर दिए है। सड़क के लिए बजट स्वीकृत होने पर उप ब्लॉक प्रमुख धर्मेंद्र प्रधान के नेतृत्व में इब्राहिमपुर के साथ आसपास के गांवों के निवासी भारी संख्या में वेद मंदिर आश्रम पहुंचे और फूलमाला पहनाकर पूर्व कैबिनेट मंत्री स्वामी यतीश्वरानंद का स्वागत किया। स्वामी यतीश्वरानंद ने कहा कि सड़क का निर्माण होने से इब्राहिमपुर के साथ अलीपुर, रोहालकी, बहादराबाद, भगतनपुर आबिदपुर, अम्बूवाला, झाबरी, सुकरासा, इक्कड़, पथरी, डांडी, चिट्टीकोठी आदि गांवों को फायदा होगा। स्वामी यतिश्वरानंद ने कहा कि क्षेत्र में कई सड़कों के निर्माण के साथ तमाम विकास कार्य सुचारू है। उन्होंने क्षेत्र के निवासियों से कहा कि जहां और जिस क्षेत्र में समस्या हो, उसका जल्द से जल्द निवारण कराया जाएगा। जनता की समस्याओं को लेकर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी गंभीर है और उस पर तत्काल काम हो रहा है। इस अवसर पर शाहनवाज खान, शाहनजर, मोहित सैनी, प्रीतम सैनी, धर्मपाल सैनी, गोविंदा, मैनपाल, मेहंदी हसन, शराफत, प्रवेज, जावेद, मुजम्मिल, जावेद राव, सौरभ शर्मा, इकलाख राव, राव सद्दाम, राव जरार, जिला पंचायत प्रतिनिधि अरविंद कुमार, सोनू, राव मोनू, राव खालिद, इरफान अंसारी, असजद प्रधान, रियाज, मेहरान प्रधान, मुनाजिर हुसैन, राव इनसाद, अब्दुल कादिर, इकरार खान, राव रिहान, तौफीक खान, राव रिजवान, तौफीक, राशिद, साजिद, अब्दुल कादिर, सलमान खान, इकरार खान, राव समीर, साजिद खान, सोहेल खान, सलीम खान, कुर्बान राव, अजमल खान, शादाब खान, असलम खान, अजहर खान, जाबिर खान, राव खालिद, कुर्बान अली आदि शामिल रहे।

बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति के प्रतिनिधिमंडल ने सीएम धामी से की मुलाकात

देहरादून(नवल टाइम्स)। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से मुख्यमंत्री आवास पर बद्री-केदार मंदिर समिति के प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। समिति के अध्यक्ष हेमंत द्विवेदी के नेतृत्व में आए प्रतिनिधियों ने चारधाम यात्रा के सफल, सुचारु और सुरक्षित संचालन के लिए राज्य सरकार का आभार प्रकट किया।

प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री को बताया कि इस वर्ष यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं की सुविधाओं, मार्ग व्यवस्था, आपातकालीन सेवाओं और समग्र प्रबंधन को लेकर सरकार द्वारा किए गए प्रयास अत्यंत सराहनीय रहे हैं। उन्होंने कहा कि सरकार के समर्पित कार्यों के परिणामस्वरूप यात्रियों को यात्रा के दौरान न केवल बेहतर सुविधा मिली, बल्कि सुरक्षा का भरोसा भी बना रहा।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रतिनिधिमंडल का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य सरकार चारधाम यात्रा को श्रद्धा, व्यवस्था और सुरक्षा के संतुलन के साथ संचालित करने के लिए पूरी प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि सरकार का प्रयास है कि हर श्रद्धालु इस पवित्र यात्रा से सुखद अनुभव लेकर लौटे और उत्तराखंड की संस्कृति एवं सेवा भावना की सकारात्मक छवि देश-दुनिया में जाए।

कांवड़ मेला सकुशल सम्पन्न के लिए नियंत्रण कक्ष सीसीआर में स्थापित

मेला क्षेत्र में 16 सुपर जोनल, 37 जोनल व 124 सेक्टर मजिस्ट्रेट तैनात

हरिद्वार(नवल टाइम्स)। जिला मजिस्ट्रेट एवं जिलाधिकारी मयूर दीक्षित ने बताया कि श्रवण मास में 11 जुलाई से 23 जुलाई तक चलने वाले कांवड़ में देश के विभिन्न प्रदेशों से करोड़ों की संख्या में कांवड़ियों व श्रद्धालुओं के आने की प्रबल सम्भावना है। जिस कारण विशेष सतर्कता बरते तथा विभिन्न विशेष व्यवस्थायें बनाना आवश्यक है। इस महत्वपूर्ण अवसर पर कांवड़ मेला क्षेत्र के विभिन्न जोन से सम्बन्धित सेक्टरों में स्वच्छता एवं सफाई, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, यातायात एवं भीड़ नियंत्रण, विभिन्न व्यवस्था एवं शांति सुरक्षा, मोटर एवं पैदल मार्ग व्यवस्था व नियंत्रण, विद्युत आपूर्ति, पेयजल आपूर्ति, मार्ग प्रकाश, अग्नि सुरक्षा शौचालयों में जलापूर्ति एवं प्रकाश व्यवस्था तथा उनकी समय से सफाई, जल भराव का निस्तारण, पार्किंग स्थलों में पैरिकेटिंग, पेयजल, सम्पर्क मार्ग एवं प्रकाश, अस्थायी पुलों, कांवडियों एवं

श्रद्धालुओं की सुविधाओं, अस्थायी घाटों की समुचित व्यवस्था, स्थायी घाटों पर रेलिंग, चेन, सफाई, काई सफाई एवं प्रकाश, ध्वनि विस्तारक यंत्रों की सुविधाये, मुख्य मार्गों व स्थलों पर सर्कतक पट्टिकाओं की व्यवस्था, पार्किंग तथा खाद्यान्न आपूर्ति इत्यादि और अन्य सुसंगत व्यवस्थायें सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी संबंधित विभाग की है। उन्होंने बताया कि कांवड़ मेले में आने वाले श्रद्धालुओं एवं कांवड़ियों की यात्र को सरल, सुगम एवं सहजता प्रदान करने, सम्पूर्ण मेला क्षेत्र में कानून एवं शान्ति व्यवस्था और यातायात की व्यवस्थाओं हेतु व्यवस्थाएं सुनिश्चित कराने के लिए जोनल व सेक्टर मजिस्ट्रेटों की तैनाती की गई है, जोकि 10 जुलाई अपराह्न 04 बजे से प्रारम्भ होगी तथा दिनांक 23 जुलाई को जलाभिषेक के उपरांत मेला समाप्ति तक प्रभावी रहेगी। इस दौरान कोई भी तैनात मजिस्ट्रेट अनुमति के बिना अपनी ड्यूटी से अनुपस्थित नहीं होगा।

उन्होंने बताया कि इसके साथ ही नगर मजिस्ट्रेट हरिद्वार नगर क्षेत्र में तथा समस्त उप जिला मजिस्ट्रेट अपने-अपने उप मण्डल में विधि एवं शान्ति व्यवस्था कायम रखने हेतु जिम्मेदार रहेंगे। अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) हरिद्वार फिंचाराम चैहान (मो.-9520581108 व 9411181108) तहसील हरिद्वार एवं भगवानपुर के कांवड़ मेला क्षेत्र तथा अपर जिलाधिकारी (वि0एवं 10) हरिद्वार दीपेन्द्र सिंह नेगी मो.- (0412368661 4 933839976) तहसील लक्सर एवं रूड़की कांवड़ मेला क्षेत्र के नोडल अधिकारी नामित किये गये है, जो समय-समय पर कांवड़ मेले से संबंधित सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित करायेगे। उन्होंने बताया कि 16 सुपर जोनल मजिस्ट्रेट, 37 जोनल मजिस्ट्रेट और 124 सेक्टर मजिस्ट्रेट की तैनाती की गई है, जोकि मेला अवधिके दौरान दो शिफ्ट में कार्य करेंगे। उन्होंने बताया कि कांवड़ मेले के सफल आयोजन हेतु सीसीआर में कांवड़ मेला नियंत्रण कक्ष की स्थापना की गई है। जिसके लिए जिला प्रोबेशन अधिकारी अविनाश भदौरिया, प्रभारी अधिकारी कांवड़ मेला कन्ट्रोल रूम तथा सहयोग हेतु जिला आपदा प्रबन्धन अधिकारी मीरा रावत को तैनात किया गया है। मेला नियंत्रण कक्ष के 24 घण्टे की तर्ज पर संचालन हेतु रोस्टर बनाकर 12 कार्मिकों की तैनाती की गई है।

विवेचना की गुणवत्ता सुधार को डीजीपी ने ली उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक

- **गंभीर अपराधों की जांच में पारदर्शिता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण बढ़ाने को नियमित प्रशिक्षण पर दिया जोर**
- **न्यायालयीय निर्देशों के अनुपालन में थानों से लेकर कप्तानों तक जवाबदेही तय**

देहरादून(नवल टाइम्स)। पुलिस महानिदेशक दीपम सेठ की अध्यक्षता में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से गढ़वाल एवं कुमाऊ रेंज सहित समस्त जनपदों के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षकों के साथ एक महत्वपूर्ण उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक आयोजित की गई। डीजीपी ने सभी अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि गंभीर अपराधों की विवेचना में गुणवत्ता, समयबद्धता और पारदर्शिता अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने जांच रिपोर्ट, चार्जशीट एवं फाइनल रिपोर्ट आदि पर वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा व्यक्तिगत पर्यवेक्षण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। डीजीपी ने बताया कि अधिकतर अपराधों हेतु पुलिस मुख्यालय द्वारा सरल और अपराध-आधारित एस0ओ0पी0 तैयार की गई हैं, जिन्हें नए आपराधिक कानूनों के अनुरूप अद्यतन किया जाना आवश्यक है। उन्होंने उच्च न्यायालय द्वारा प्रकरणों की जांच प्रक्रिया को लेकर की गई अपेक्षाओं से अधिकारियों को अवगत कराते हुए बताया कि विवेचना सही एवं निष्पक्ष हो इसके लिए इन्वेस्टिगेशन प्लान, वैज्ञानिक साक्ष्य, वीडियोग्राफी एवं इलेक्ट्रानिक साक्ष्य आदि का समावेश होना नितान्त आवश्यक है। एक विवेचक को अभियोजन अधिकारियों से पूर्व समन्वय स्थापित करना चाहिए ताकि प्रभावी न्यायिक प्रस्तुतिकरण सुनिश्चित हो सके। पुलिस महानिदेशक ने निर्देशित किया कि थानों की विवेचनाओं का प्रभावी पर्यवेक्षण, कमियों की पहचान और समयबद्ध सुधार सम्बन्धित क्षेत्राधिकारी, अपर पुलिस अधीक्षक एवं जनपद स्तर पर सुनिश्चित किया जाए। मुख्यालय के निर्देशों की अवहेलना पर विवेचक, थानाध्यक्ष, क्षेत्राधिकारी और अपर पुलिस अधीक्षक स्तर के अधिकारियों का उत्तरदायित्व भी सुनिश्चित किया जाय। समस्त जनपद प्रभारियों द्वारा अपने-अपने सुझावों से अवगत कराया गया। मुख्यालय स्तर पर गोष्ठी में उपस्थित उच्चाधिकारियों द्वारा गहन चर्चा कर विवेचना की गुणवत्ता में सुधार हेतु अपने अनुभव साझा किये।

डीजीपी ने निर्देश दिए कि नियमित रूप से ओ0आर0 के माध्यम से विवेचकवार विवेचना की गहन समीक्षा सुनिश्चित की जाए। प्रत्येक जनपद में क्षेत्राधिकारी व अपर पुलिस अधीक्षक स्तर तक अपराध समीक्षा की साप्ताहिक कार्ययोजना बनाई जाए। जांच प्रक्रिया में वैज्ञानिक साक्ष्य, वीडियोग्राफी एवं इन्वेस्टिगेशन प्लान को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाए। न्यायालय द्वारा किसी प्रकरण में दिए गए निर्देशों को जनपद क्राइम मीटिंग में अवश्य साझा किया जाए। प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार कर 3000 विवेचकों को चरणबद्ध रूप से नये अपराधिक कानूनों, वैज्ञानिक साक्ष्य, अभियोजन समन्वय एन0डी0पी0एस0, महिला एवं बाल अपराध, साइंटिफिक इन्वेस्टिगेशन हेतु भेजा जाए। जनपद स्तर पर नियमित रूप से इन-हाउस प्रशिक्षण सत्र आयोजित किये जाए। जांच अधिकारियों के वर्कलोड का भी आंकलन कर लिया जाए, जिससे विवेचनात्मक क्षमता का मूल्यांकन हो सके। सर्किलवार क्राइम मीटिंग, साप्ताहिक-मासिक अपराध समीक्षा का विवरण नियमित रूप से प्रेषित करना सुनिश्चित किया जाए। डीजीपी ने कहा कि पुलिसिंग एक निरंतर चुनौती है ड्यूटी लोड, दबाव एवं चुनौतियों के बावजूद हमें पेशेवर दक्षता और जवाबदेही के साथ कार्य करना है। उन्होंने यह भी कहा कि हमें निष्पक्ष रूप से पुलिसिंग का ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करना है जहां निरंतर सुधार की स्पष्ट रणनीति और ठोस क्रियान्वयन दिखे। समीक्षा बैठक में डॉ0 वी0 मुरूगेशन, अपर पुलिस महानिदेशक अपराध एवं कानून व्यवस्था, ए0पी0 अंशुमान, अपर पुलिस महानिदेशक प्रशासन, नीलेश आनन्द भरणे, पुलिस महानिरीक्षक, अपराध एवं कानून व्यवस्था, अनंत शंकर ताकवाले, पुलिस महानिरीक्षक प्रशिक्षण, राजीव स्वरूप, पुलिस महानिरीक्षक गढवाल परिक्षेत्र, धीरेन्द्र गुंज्याल, पुलिस उपमहानिरीक्षक अपराध एवं कानून व्यवस्था, तृप्ति भट्ट, पुलिस अधीक्षक जीआरपी, नवनीत भुल्लर, एस0एस0पी0 एस0टी0एफ0 उपस्थित रहे।

प्रत्येक लाभार्थी तक आयुष्मान का लाभ पहुंचाना प्राथमिकता: अरविंद

देहरादून: राज्य स्वास्थ्य प्राधिकरण तथा आयुष्मान व गोल्डन कार्ड सूचीबद्ध अस्पतालों की संयुक्त समीक्षा बैठक में ऑनलाइन पोर्टल से लेकर दावों के यथा समय निस्तारण, अमान्य दावे, रिव्यू आदि विभिन्न मसलों पर चर्चा हुई। योजना के बेहतर संचालन हेतु कई सुझाव भी प्रतिभागियों ने साझा किए।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्राधिकरण के चेयरमैन अरविंद सिंह ह्यांकी ने कहा कि आयुष्मान योजना का लाभ हर लाभार्थी तक पहुंचे। यह हम सबकी प्राथमिकता है। बैठक में उपस्थित अस्पताल प्रतिनिधियों व ऑनलाइन जुड़े प्रतिनिधियों को अपनी बात रखने का अवसर दिया गया। इस दौरान उन्होंने अपने अस्पताल की विशिष्ट समस्या के साथ साथ अस्पतालों की सामान्य समस्याओं पर ध्यानाकर्षण किया। चेयरमैन ने कहा कि एनएचए के ट्रांजिक्शन मैनेमेंट सिस्टम (टीएमएस) में समय समय पर आ रही तकनीकी कठिनाइयों तथा रिव्यू सम्बन्धी नई व्यवस्था के कारण अस्पतालों के आयुष्मान सम्बन्धी दावों के निस्तारण में कुछ समय लगा है, लेकिन अब इसे शीघ्रता से कराया जा रहा है। आयुष्मान के दावों का भुगतान पन्द्रह दिनों के अंदर करने का लक्ष्य रखकर ही कार्यवाही की जा रही है।

पुराने दावों के सापेक्ष पोर्टल में रिव्यू संबंधी कठिनाई के दृष्टिगत ऑफ लाइन रिव्यू का अवसर दिया जायेगा। दावों के रिव्यू सिस्टम को आसान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश का अपना टीएमएस तैयार किया जा रहा है। तब टीएमएस में आने वाली दिक्कतें दूर हो जाएंगी।उन्होने कहा की प्राधिकरण के स्तर पर प्रक्रियाओं को सरल बनाने और यथासंभव ऑनलाइन सिस्टम बनाकर उन्हें फेसलेस करने हेतु हर संभव प्रयास किया जा रहा है। ताकि प्रकरणों का शीघ्र निस्तारण हो और अस्पतालों को प्राधिकरण का चक्कर न लगाना पड़े। अस्पतालों से भी यह अपेक्षित है कि मरीजों की सुविधा और इलाज पर पूरा ध्यान दिया जाए और उपचार के बिल एनएचए और एसएचए के दिशा निर्देशों और मानकों के अनुरूप ही प्रक्रिया फॉलो करते हुए सही-सही प्रस्तुत करें। ताकि आपत्ति न लगे और भुगतान में अनावश्यक विलंब न हो। साथ ही कहा कि कामकाज में व्यवहारिकता का होना जरूरी है। सक्षम प्राधिकारियों के द्वारा विशिष्ट प्रकरणों में सम्यक विचार करते हुए न्यायोचित निर्णय लिए जाएंगे।

कानूनी सलाहकार
एड. अनुज कुमार शर्मा
चैम्बर नं. 20, रोशनाबाद
हरिद्वार (उत्तराखंड)
मो. 9837387718

गुरुपूर्णिमा समर्पण और साधना का महापर्व: डॉ. चिन्मय

हरिद्वार(नवल टाइम्स)। गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में चल रहे तीन दिवसीय गुरुपूर्णिमा महापर्व के दूसरे दिन भावपूर्ण आध्यात्मिक वातावरण में विविध कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। दिन की शुरुआत ध्यान-साधना से हुई, जिसके पश्चात् चैबीस घंटे के गायत्री महामंत्र अखण्ड जप और हवन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में देश-विदेश से पधारे हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। गुरुपूर्णिमा महापर्व के पूर्व संध्या में साधकों को दिये अपने संदेश में देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा कि गुरुपूर्णिमा सद्गुरु की महाकृपा को अनुभव करने का पर्व के साथ ही यह शिष्य के समर्पण और साधना की पूर्णता का भी प्रतीक है। उन्होंने कहा कि जब शिष्य समर्पण के साथ अपने अहं को विसर्जित करता है, तभी शिष्योऽहम् की दिव्य अनुभूति होती है। सद्गुरु ही शिष्य के जीवन के केंद्र में विराजमान हो जाते हैं,

और उनके रोम-रोम में समा जाते हैं। डॉ. पण्ड्या ने कहा कि गुरु की कृपा से ही तत्त्वज्ञान, आत्मबोध और ईश्वर की कृपा सहज सुलभ हो जाती है। उन्होंने जीवन में साधना की आवश्यकता और उसका महत्त्व भी रेखांकित किया। युवा आइकॉन ने कहा कि आज के समय में जब दिशाहीनता और मानसिक तनाव बढ़ रहा है, तब गुरुतत्त्व ही ऐसा पथप्रदर्शक है, जो व्यक्ति को आत्मिक बल, नैतिक दृष्टि और जीवन की सही दिशा प्रदान करता है। इससे पूर्व शांतिकुंज महिला मण्डल की प्रमुख शैफाली पण्ड्या ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा का सम्पूर्ण जीवन तप, साधना और संवेदना की जीती-जागती प्रतिमूर्ति रहा है। उन्होंने पचास के दशक से नारी जागरण, आत्मनिर्भरता और शिक्षण जैसे अभियानों का संचालन किया, जिसके परिणामस्वरूप आज लाखों बहिनें सुशिक्षित होकर समाज निर्माण में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। उन्होंने सभ्य व सुसंस्कृत समाज के लिए नारी की सुरक्षा, शिक्षा, स्वावलंबन और संस्कार को महत्त्वपूर्ण बताया। शांतिकुंज व्यवस्थापक योगेन्द्र गिरि ने कहा कि दैवीय अभियान में सच्चे मन से जुड़ना सौभाग्य को जगाने जैसा है। जोनल समन्वयक डॉ. ओपी शर्मा ने यज्ञीय परंपरा और गायत्री माता की भूमिका पर विस्तृत जानकारी दी।

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक संजीव शर्मा ने किरण ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस, निकट गुरूकुल कांगड़ी फार्मेसी, कनखल, हरिद्वार (उत्तराखंड) से छपवाकर, म.नं. डी-31/2 आदर्शनगर कालोनी, गोल गुरूद्वारा, सेंटमेरी स्कूल के पीछे, ज्वालापुर हरिद्वार (उत्तराखंड) से प्रकाशित किया।

: सम्पादक :
संजीव शर्मा
मो. 8057605991/9897106991
ईमेल: navaltimes@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र हरिद्वार होगा

प्रबंध संपादक
डा. संदीप भारद्वाज
बिजनौर प्रभारी
विशाल शर्मा

सभी पद अवैतनिक हैं